Subject :- Sociology Date :- 24/07/2020
Class :- 12th
Topic :- प्रभु जाति तथा इसके तत्व
By :- Dr. Shyamanand Choudhary
Guest Teacher Marwari College, Darbhanga
Online Study Material No :-

भारतीय समाजशास्त्री Prof. M. N. Srinivas ने 1955 ई. में मैसूर के रामपुरा गाँव के अध्ययन के दौरान प्रभु-जाति की अवधारणा को विकसित किया उसके पश्चात विभिन्न विद्वानों ने इस अवधारणा का प्रयोग कर इसकी उपादेयता का परीक्षण किया। प्रभु जाति के समानान्तर आज अनेक अन्य शब्दों का प्रयोग किया जा रहा है जिनमें प्रबल जाति, प्रभुता सम्पन्न जाति प्रभावशाली जाति संख्यक जाति आदि अधिक प्रचलित शब्द है प्रभु जाति को परिभाषित करते हुए भी निवास ने लिखा है एक जाति तब प्रभु जाति कही जाती है जब वह संख्यात्मक आधार पर किसी गाँव अथवा स्थानीय क्षेत्र में शक्तिशाली हो तथा आर्थिक एवं राजनैतिक रूप से अपने प्रभाव का प्रबल रूप से प्रयोग करती हो यह आवश्यक नहीं कि परम्परागत जातीय संस्तरण में वह सर्वोच्च जाति के रूप में ही हो।

("A Caste is dominant when it is numerically the strongest in the village or local area and economically and politically exercises a preponderating influence it need not be the highest caste in terms of traditional and conventional ranking of caste.")

इस परिभाषा से पता चलता है कि उस जाति को प्रभु जाति कहा जा सकता है जिसकी जनसंख्या एक गाँव अथवा स्थानीय क्षेत्र में अन्य जातियों से अधिक हो जिसके पास कृषि योग्य भूमि का अधिकांश भाग हो और जिसमें राजनीति को प्रभावित करने की क्षमता हो। प्रो० श्री निवास

Scanned with CamScanner

ने पुनः लिखा है कि कोई भी जाति एक क्षेत्र में प्रभु हो सकती किन्तु अब तक किसी भी अछूत जाति को प्रभु जाति के रूप में नहीं पाया अर्थात केवल सवर्ण जाति ही प्रभु जाति नहीं बन सकती है बल्कि कोई भी जाति प्रभु जाति बन सकती है किन्तु उसकी स्थान जाति संस्तरण में अति निम्न नहीं होना चाहिए अछूत जातियों को जातिय संस्तरण में सबसे निम्न स्थान प्राप्त है इसलिए प्रो० श्री निवास ने लिखा है कि मैंने कहीं भी अछूत जाति को प्रभु जाति के रूप में नहीं देखा है प्रभु जाति के निर्धारक तत्व (Determinant elements of "Dominant caste):-

प्रभु जाति के निर्धारक तत्व निम्नांकित है

(1) जनसंख्यात्मक शक्ति (Numerical strength):- प्रभु जाति के निर्धारण का एक प्रमुख तत्व किसी गाँव अथवा स्थानीय क्षेत्र में सदस्यों की संख्या अधिक होना है श्री निवास ने भी लिखा है कि एक जाति तब "प्रभु जाति कही जाती है जब वह संख्या के आधार पर गाँव अथवा स्थानीय क्षेत्र में शक्तिशाली हो (A caste is dominant when it is numerically the strongest in the village or local area) एक गाँव अथवा स्थानीय क्षेत्र में किसी जातियों के सदस्यों की संख्या अधिक होने से उन जातियों पर उसका प्रभुत्व स्थापित हो जाता है C.M. Elliott तथा K.L. Sharma ने भी जनसंख्यात्मक शक्ति को प्रभु जाति का प्रमुख निर्धारक तत्व बताया है K.L Sharma ने सवलपुरा गाँव का अध्ययन कर बताया है कि इस गाँव में जाति इसलिए प्रभु जाति है क्योंकि इसके सदस्यों की संख्या सबसे अधिक है

(2) भू-स्वामित्व (Land ownership):-

Scanned with CamScanner

प्रभु जाति के निर्धारण का दूसरा प्रमुख तत्व भू-स्वामित्व है अर्थात किसी गाँव में वही जाति प्रभु जाति हो सकती है जिसके पास गाँव की कुल कृषि योग्य भूमि का अधिकांश भाग हो विभिन्न विद्वानों ने अपने क्षेत्रीय अध्ययनों के आधार पर भू-स्वामित्व को प्रभु-जाति के निर्धारण का प्रमुख आधार बताया है R. C. Sharma के अनुसार बाँवारी गाँव की कुल 405 एकड़ भूमि में से 383 एकड़ भूमि पर वहाँ कि प्रभु जाति जाट का स्वामित्व है इसी तरह योगेन्द्र सिंह ने यह विचार व्यक्त किया है कि पूर्वी उत्तर प्रदेश के सेनापुर गाँव में राजपूत प्रभु जाति के रूप में इसलिए उभर सके क्योंकि उनके पास गाँव की कुल भूमि का 82% भू-भाग है

(3) राजनैतिक प्रभुत्व (political dominance):- जिस जाति का राजनैतिक प्रभुत्व सबसे अधिक होता है वह जाति प्रभु-जाति के रूप में स्वीकार कर ली जाती है यहाँ यह वर्णन करना अप्रासंगिक नहीं प्रतीत होता कि किसी गाँव अथवा स्थानीय क्षेत्र में उसी जाति का राजनैतिक प्रभुत्व अधिक रहता है जिस जाति के लोगों की संख्या अधिक रहती है व्यावहारिक रूप से ऐसा देखा जाता है कि भारत के विभिन्न भागों में वे ही जातियाँ प्रभु जाति के रूप में उभरी हैं जिनके पास राजनैतिक सत्ता को प्रभावित करने की शक्ति है

(4) जातीय संस्तरण में उच्च स्थिति (High Status in Caste Hierarchy):- अर्थात वही जाति प्रभु-जाति का स्थान ग्रहण करती है जिस जातीय संस्तरण में तुलनात्मक रूप से उच्च

Scanned with CamScanner

स्थिति प्राप्त रहती है एक जाति को प्रभु जाति बनने के लिए यह आवश्यक नहीं कि वह सर्वोच्च जाति ही हो बल्कि इसके लिए आवश्यक है कि वह अति निम्न जाति न हो श्री निवास ने बताया है कि अस्पृश्यता को भारतीय समाज में अन्य जाति स्तरण में सबसे निम्न स्थान प्राप्त है अतः कहीं भी निम्न जाति के लोग प्रभु जाति के रूप में नहीं देखे जाते हैं मध्यम जाति भी प्रभु जाति का स्थान ग्रहण कर सकती है S.S Pandey ने पूर्वी उत्तरप्रदेश के गाजीपुर जिला के कुछ गाँव का अध्ययन किया और यह पाया कि कुछ गाँव में अहीर (यादव) और कुछ गाँव में कुशवाहा (कोइरी) जाति के लोग प्रभु जाति के रूप में है।

(5) आधुनिक शिक्षा (modern Education):- एक गाँव की किस जाति में आधुनिक शिक्षा का प्रसार अधिक देखा जाता है उस जाति का अन्य जातियों के ऊपर प्रभुत्व स्थापित हो जाता है R.L Sharma ने 6 गाँवों के अध्ययन के दौरान यह पाया कि इन 6 गाँवों में प्रभु जाति के अन्तर्गत अन्य जातियों की तुलना में शिक्षा का प्रसार अधिक था।

(6) आर्थिक सम्पन्नता (Economic Wellbeing):- अर्थात जो जाति आर्थिक दृष्टिकोण से अन्य जातियों से सम्पन्न होती है वह जाति प्रभु जाति के रूप में उभरती है परम्परागत रूप से ग्रामीण समाज में आर्थिक सम्पन्नता का निर्धारण केवल भूमि के आधार पर होता था किन्तु आज गाँवों में उस जाति को अधिक महत्व

Scanned with CamScanner

प्राप्त हो रहा है जिसके पास कम भूमि रहने के बावजूद भी अधिक रुपये पैसे है गाँवों में बहुत से ऐसे लोग देखे जा सकते हैं जिनके पास भूमि तुलनात्मक रूप में कम है किन्तु उन लोगों ने व्यापार नौकरी, कला बाजारी आदि माध्यमों से रुपये पैसे अधिक जमा कर लिया है जिस जाति में ऐसे लोगों की संख्या अधिक है वह जाति भी प्रभु जाति बन जाति है पूर्वी उत्तरप्रदेश के गाजीपुर जनपद में किए गये कुछ गाँव के अध्ययन से यह तथ्य स्पष्ट हुआ है कि यादव और कुशवाहा जातियों के पास भूमि अधिक नहीं है किन्तु इन जातियों के लोगों ने कृषि के नवीन प्रविधियों का उपयोग कर अधिक धन अर्जित कर लिया है और आज वे प्रभु जाति के रूप में उभरे है

(7) प्रशासनिक स्थिती (Administrative Status) :- यदि किसी गाँव में किसी विशिष्ट जाति के अधिक सदस्य विभिन्न श्रेणियों की प्रशासनिक सेवाएँ प्राप्त कर लेते हैं तो कुछ समय के वह जाति प्रभु जाति का स्थान ग्रहण कर लेती है।

(8) विकास योजनाओं से लाभ की सीमा:- डुबिगट ने भी यह विचार व्यक्त किया है कि वर्तमान युग में जातियाँ प्रभु जातियों के रूप में उभरी है जिन्होंने विभिन्न विकास योजनाओं तथा मुख्य रूप से सामुदायिक विकास योजनाओं का अधिकाधिक लाभ प्राप्त किया है।

※ समालोचना ※

प्रो. श्री निवास ने प्रभु जाति के जिन निर्धारक तत्वों का उल्लेख किया है उससे आज अनेक विद्वान सहमत नहीं हैं और इस अवधारणा की आलोचना प्रस्तुत की है विभिन्न विद्वानों ने भारत के विभिन्न गाँवों का अध्ययन कर प्रो० श्री निवास द्वारा बताये गये प्रभु जाति के निर्धारक तत्वों को मानने से इन्कार किया है कुछ विद्वानों ने इस अवधारणा के विरुद्ध जो आपत्तियाँ

उनाई है वे निम्नलिखित है :-

(1) प्रो. S.C. Dube ने प्रभु जाति की आलोचना करते हुए लिखा है कि श्री निवास ने प्रभु जाति के निर्धारण के लिए जिस संख्यात्मक शक्ति को आधार माना है उसका औचित्य अधिक नही है इनके अनुसार एक जाति केवल अपनी संख्या के कारण प्रभु-जाति नही है प्रो. दुबे ने बताया है कि यदि किसी क्षेत्र विशेष मे जाति के सदस्यों की संख्या अधिक हो किन्तु उनमे एकता और जागरूकता का अभाव हो तो वह जाति कभी भी प्रभावशाली नही हो सकती है इसके विपरीत यदि किसी गाँव या क्षेत्र मे एक जाति की संख्यात्मक शक्ति कम हो किन्तु उसके सदस्यो मे एकता और जागरूकता अधिक हो तो वह जाति शीघ्र ही शक्तिशाली जाति बन जाति है इसी तरह प्रो. दुबे ने बताया है कि आर्थिक एवं राजनैतिक शक्ति भी प्रभु जाति का आधार उसी समय बन सकती है जब इसका प्रयोग सम्पूर्ण जाति की भलाई के लिए किया गया हो इसी तरह प्रो. दुबे के अनुसार किसी जाति को प्रभु जाति होने के लिए जातिय संस्तरण मे उसका स्थान उच्च होना भी आवश्यक आधार नही है यही कारण है कि कुछ गाँवो मे मध्यम जातियाँ ही प्रभु-जाति है

(2) D.N. Majumdar ने भी प्रो. श्री निवास के प्रभु जाति की अवधारणा की आलोचना प्रस्तुत की है उन्होने भी संख्यात्मक शक्ति को प्रभु-जाति के निर्धारण का आवश्यक तत्व नही माना है इन्होने मोहना गाँव का अध्ययन कर यह विचार व्यक्त किया है कि यदि किसी गाँव मे किसी जाति के सदस्यों की संख्या कम हो किन्तु समीपवर्ती गाँव मे उस जाति की सदस्यों की संख्या अधिक हो तो वह जाति भी प्रभु जाति बन सकती है। इन्होने एक उदाहरण देते हुए बताया है कि परम्परागत जमीन्दार वर्ग के सदस्यों की संख्या कम रहती है किन्तु अक्सर जमीन्दार की जाती ही प्रभु जाति के रूप मे देखने को मिलती है आज यह आवश्यक

नहीं है कि किसी गाँव की बहुसंख्यक जाति का निर्णय अन्य जातियों के गौण माने

3. कभी - कभी प्रमुख जाति के निर्धारण में व्यावहारिक कठिनाईयाँ उत्पन्न होती है ऐसा भी हो सकता है कि किसी गाँव में सदस्यों की संख्या जाति संस्तरण तथा आर्थिक एवं राजनैतिक रूप से एक से अधिक जातियों के प्रमुख जाति होने का दावा करे ऐसी परिस्थिती में यह तय करना बड़ा कठिन होगा कि उनमें से किसे प्रमुख जाति कहा जाए उदाहरणस्वरूप भागलपुर के पास भरको गाँव में ब्राह्मण और यादव दोनों ही प्रमुखत्व का दावा करते है.

S. N. Choudhary
Marwari College
T.M.B.U